Globus Journal of Progressive Education
A Refereed Research Journal
Vol 6 / No 1 / Jan-Jun 2016 ISSN: 2231-1335

मृणाल पाण्डे के उपन्यासों का अध्ययन

***मधु जून**
****डा0 दर्शना**

साहित्य और समाज का अटूट सम्बन्ध है। समाज में साहित्य की भूमिका केवल एक दर्पण की ही नहीं, अपितु उसे प्रगतिशील बनाने वाले सदा–सर्वदा निर्माता की भी है क्योंकि लोककल्याण को दृष्टि में रखकर ही रचनात्मक साहित्य लिखा जाता है जो समाज को अवनति से उन्नति की ओर ले जाता है।

परिचय

साहित्यकार अपने युग और परिवेश से प्रभावित होकर ही साहित्य रचना करता है। साहित्यकार समकालीन सामाजिक परिस्थितियों के प्रति सदैव ही जागरूक होता है और समाज के तत्कालीन परिदृश्य को बिना लाग–लपेट के जो कुछ जैसा जहाँ घटित हो रहा है, उसे ठीक वैसे ही यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत करता है। एक सपफल साहित्यकार वही होता है, जो व्यष्टि और समष्टि को समरूप मानकर अपने भावों को उजागर करता है और समाज को अनेक समस्याओं से अवगत कराकर उनके निवारण की युक्ति प्रस्तुत करता है, जिससे समाज में नवचेतना का संचार होता है।

मृणाल पाण्डे जी भी उन्हीं साहित्यकारों में से एक हैं, जिन्होंने ऐसे समय में लेखन कार्य आरम्भ किया है जब समाज में चारों ओर विषाद और विपन्नता व्याप्त है। मृणाल जी का व्यक्तित्व सौम्य व गरिमापूर्ण रहा है। वे मात्रा परम्परावादी नहीं है, अपितु वैज्ञानिक यथार्थवादी दृष्टिकोण से ओत–प्रोत हैं। मृणाल जी में सरलता, ईमानदारी, स्वाभिमानी आदि गुणों की झलक प्रथम दृष्टि में ही मिलती है।

***शोधकर्त्ता, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर**

****शोध निर्देशक, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर**

उनमें देश 26 पफरवरी 1946 को मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ में जन्मी मृणाल जी ने व्यवसाय के क्षेत्रा में अनेक स्तरों पर संघर्ष का सामना किया और इन संघर्षों पर विजय–पताका पफहराती हुई हमेशा आगे बढ़ी। उन्होंने पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्रा में पुरुषों के साथ खड़े होकर भावी महिला पीढ़ी के लिए भी आगे बढ़ने व अपने अस्तित्व को स्थापित करने के रास्ते खोल दिए हैं। प्रत्येक साहित्यकार अपने पूर्व व अपने समकालीन वातावरण से प्रभावित होता है। इसलिए यह जानना अति आवश्यक है कि मृणाल जी से पहले व उनके समकालीन महिला उपन्यासकारों की क्या स्थिति एवं परिस्थितियाँ रही हैं। इसके लिए स्वाधीनता पूर्व महिला उपन्यासकार जैसे ऊषादेवी मित्रा, कंचनलता सब्बरवाल, कमलापुरी, कमलेश सक्सेना, प्रकाशवती आदि व स्वतंत्रयोत्तर महिला उपन्यासकार जैसे शिवानी जी, कृष्णा सोबती, रजनी पनिकर, मनु भण्डारी, ऊषा प्रियम्वदा, मालती जोशी, राजी सेठ आदि का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

मनुष्य समाज की सबसे छोटी ईकाई है। समाज को विकसित करने में महत्त्वूपर्ण भूमिका निभाती है–मानवीय चेतना। मानव की चेतना उसे केवल उसके परिवेश को समझने की ही शक्ति प्रदान नहीं करती बल्कि अतीत व भविष्य के बीच मूल्यांकन करने की क्षमता भी प्रदान करती है। समाज में जब कोई नई विचारधारा किसी लक्ष्य को लेकर आती है तो समाज में उसके कारण जागृति आती है तो उसे ही सामाजिक चेतना कहते हैं।

साहित्य की समीक्षा

अनामिका (2007) मृणाल जी की शिल्प–संरचना भी सामाजिक चेतना को ही अभिव्यक्त करती नजर आती है। उन्होंने शिल्प–संरचना में पूरा ध्यान रखा है कि वह लोक जन–जीवन से ऊपर का साहित्य न बन जाए। वे सदैव की समाज से जुड़कर चलती नजर आई है। उन्होंने लोक कथात्मक भाषा का प्रयोग किया है और उनके प्रतीक व बिम्ब भी सामाजिक चेतना से अछूते नहीं हैं। उनकी भाषा में भी आंचलिक व देशज शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो उनकी भाषा को समाज के अधिक निकट ले आता है।

रवि शंकर (2013) साहित्य चेतना का प्रतिबिम्ब होता है। यह कथन अंशतः ठीक भी है किन्तु साहित्य को केवल युग सापेक्ष कहना भी ठीक नहीं। यह केवल दर्पण नहीं जिसमें समय की परछाई पड़ती है, बल्कि यह एक क्रियात्मक और निर्माणकारी शक्ति भी है, जिसके द्वारा समाज और युग अपने रूप विधान की प्रेरणा पाता है। साहित्य की यह शक्ति गतिहीन अथवा जड़ नहीं, जो केवल एक समय किसी विशेष परिस्थिति वश जागरूक हो गई, फिर कुछ समय के लिए सुप्त अथवा निष्क्रिय हो गई। वरन् साहित्य काल क्रम में बंधा हुआ एक ऐसा चिरन्तन प्रवाह है, जो मानव सृष्टि के आदिकाल से ही जब से मनुष्य में कलात्मक रचना की प्रतिभा मुखरित हुई, भिन्न–भिन्न रूप में उसके अंदर की कशमकश अभिव्यक्त हुई है। अतः साहित्य युग चेतना का उद्‌बोधक और प्रेरक शक्ति का रूप है।

पुरातत्व साहित्य कार्यक्षेत्र

सामाजिक चेतना समाज के शुभ–अशुभ, सत्य–असत्य तथा तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक प्रवृत्तियों को जानने की शक्ति है। यह सत्य है कि सामाजिक चेतना के अभाव में साहित्य समाज का उचित दिशा–निर्देशन नहीं कर सकता। यदि साहित्य चेतना के अभाव में निष्प्राण है तो सामाजिक चेतना के बिना, दृष्टिहीन, जो न तो वर्तमान के विषय में ही कह सकता है और न ही भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

मृणाल जी के उपन्यास साहित्य में सामाजिक चेतना के प्रत्येक पक्ष को समाहित किया गया

है। जीवन के सभी पक्षों का सजीव चित्राण जितना उपन्यास कर सकता है उतना साहित्य की कोई अन्य विधा नहीं कर सकती। समाज परिवार से बनता है। मुख्यतः भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार–प्रणाली रही है। आज निजी स्वार्थों की पूर्ति व आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होने के कारण संयुक्त परिवार बड़ी शीघ्रता से टूट रहे हैं और एकल परिवारों में परिवर्तित होते जा रहे हैं। परिवार विवाह से बनता है। सामाजिक, नैतिक तथा धार्मिक विकास के लिए विवाह एक अत्यन्त पवित्रा कार्य है, जो न केवल दैहिक है बल्कि आत्मिक है, निःस्वार्थ तथा निश्छल है। वर्तमान में विवाह का स्वरूप बदल रहा है। आजकल अधिकांशतः अन्तर्जातीय विवाह, प्रेम विवाह तथा अदालती विवाह भी देखने को मिलते हैं।

निष्कर्ष

अन्तर्देशीय विवाह का प्रचलन भी बढ़ रहा हैं पति को परमेश्वर मानने वाली नारी आज समानता का दावा करती है। वर्तमान समाज में नारी विविध–रूपों में मौजूद है। आज भी समाज में ऐसी नारी है जो केवल अपने कर्त्तव्य को जानती है और अपने अधिकारों के बारे में उसे अहसास तक नहीं है। जिसके कारण वह पूर्ण शोषिता है। दूसरी ऐसी है जो अपने अधिकार भी जानती है और कर्त्तव्य भी। दोनों में सामंजस्य रखते हुए जीवन जीती है वह पारम्परिक है। तीसरी वह है जो केवल अपने अधिकारों को पहचानती और समाज की व्यवस्था के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए विद्रोह करती है। उसकी इस मानसिकता के पीछे सम्पूर्ण समाज–व्यवस्था जिम्मेदार है।

बेरोजगारी' व 'शराब' आदि भी युवा पीढ़ी को भटकाव की स्थिति में ले जा रहे हैं।

अतः स्पष्ट है कि मृणाल जी का उपन्यास साहित्य पूर्णतय समाज से जुड़ा साहित्य है। उसमें समाज के प्रत्येक पक्ष को उजागर किया गया है। सामाजिक चेतना के सभी आयाम जैसे–राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक सभी का यथार्थ चित्राण उनके उपन्यासों में मिलता है। यथार्थ को इतने करीब से जानने में उनकी साहित्यकार रूप में संवेदनशीलता व पत्राकार रूप में समाज के प्रति जागरूकता दोनों का सामंजस्य ही काम आया है।

संदर्भ

1. मृणाल पाण्डे, पटरंगपुर पुराण, राधकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2010।

2. मृणाल पाण्डे, देवी, राधकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2007।

3. मृणाल पाण्डे, हमका दिया परदेस, राधकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी–17, जगतपुरी, दिल्ली, 2001।

4. मृणाल पाण्डे, अपनी गवाही, राधकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी–17, जगतपुरी, दिल्ली, 2003।

5. मृणाल पाण्डे, रास्तों पर भटकते हुए, राधकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी–17, जगतपुरी, दिल्ली, 2000।